श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

मुक्कूर् श्रीश्रीनिवास वरदाचार्य विरचितम्

॥ श्री-अष्टलक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्री-अष्टलक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

सुमनसवन्दित सुन्दरि माधवि चन्द्र सहोदरि हेममये
मुनिगणमण्डित मोक्षप्रदायिनि मञ्जुळभाषिणि वेदनुते।
पङ्कजवासिनि देवसुपूजित सद्गुणवर्षिणि शान्तियुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि आदिलक्ष्मि सदा पालय माम्॥ १॥

अयि कलिकल्मषनाशिनि कामिनि वैदिकरूपिणि वेदमये
क्षीरसमुद्भव मङ्गळरूपिणि मन्त्रनिवासिनि मन्त्रनुते।
मङ्गळदायिनि अम्बुजवासिनि देवगणाश्रित पादयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धान्यलक्ष्मि सदा पालय माम्॥ २॥

जयवरवर्णिनि वैष्णवि भार्गवि मन्त्रस्वरूपिणि मन्त्रमये
सुरगणपूजित शीघ्रफलप्रद ज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते।
भवभयहारिणि पापविमोचनि साधुजनाश्रित पादयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धैर्यलक्ष्मि सदा पालय माम्॥ ३॥

जयजय दुर्गतिनाशिनि कामिनि सर्वफलप्रद शास्त्रमये
रथगज तुरगपदादि समावृत परिजनमण्डित लोकनुते।
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित तापनिवारिणि पादयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि गजलक्ष्मि रूपेण पालय माम्॥ ४॥

अयि खगवाहिनि मोहिनि चक्रिणि रागविवर्धिनि ज्ञानमये
गुणगणवारिधि लोकहितैषिणि स्वरसप्त भूषित गाननुते।
सकल सुरासुर देवमुनीश्वर मानववन्दित पादयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि सन्तानलक्ष्मि त्वं पालय माम्॥ ५॥

जय कमलासनि सद्गतिदायिनि ज्ञानविकासिनि गानमये
अनुदिनमर्चित कुङ्कुमधूसरभूषित वासित वाद्यनुते।

कनकधरास्तुति वैभव वन्दित शङ्कर देशिक मान्य पदे
जयजय हे मधुसूदन कामिनि विजयलक्ष्मि सदा पालय माम्॥ ६ ॥

प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि शोकविनाशिनि रत्नमये
मणिमयभूषित कर्णविभूषण शान्तिसमावृत हास्यमुखे।
नवनिधिदायिनि कलिमलहारिणि कामित फलप्रद हस्तयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि विद्यालक्ष्मि सदा पालय माम्॥ ७ ॥

धिमिधिमि धिन्धिमि धिन्धिमि धिन्धिमि दुन्दुभि नाद सुपूर्णमये
घुमघुम घुङ्घुम घुङ्घुम घुङ्घुम शङ्खनिनाद सुवाद्यनुते।
वेदपुराणेतिहास सुपूजित वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धनलक्ष्मि रूपेण पालय माम्॥ ८ ॥

॥ इति श्री-अष्टलक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम्॥